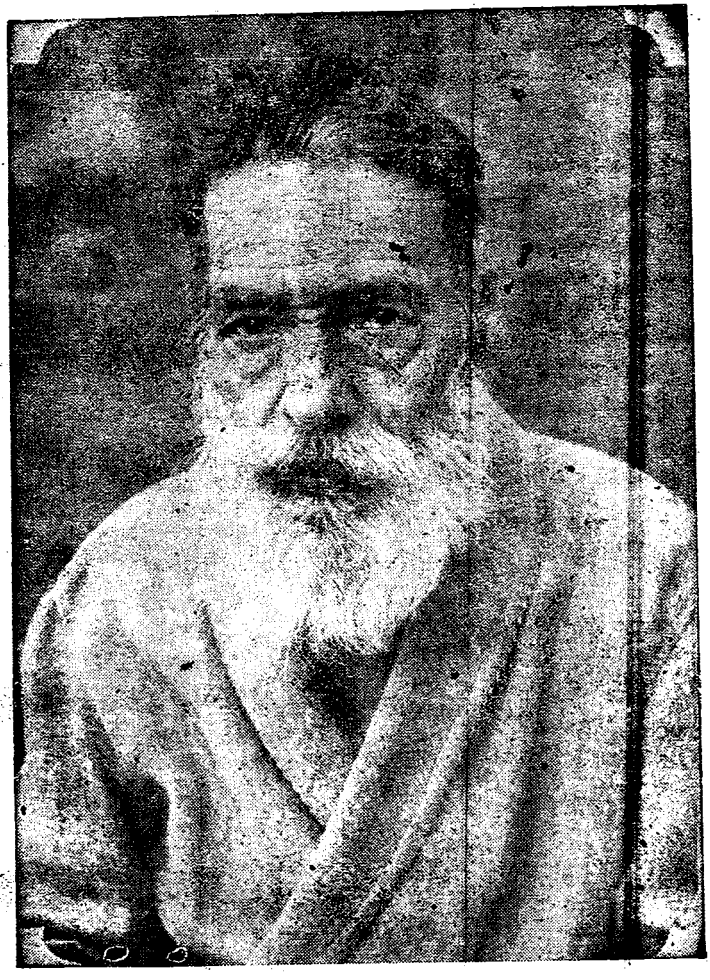

परमसन्त, परमदयाल

फकीर चन्द जी महाराज

मासिक

मानव मन्दिर

सम्पादक :— एम. आर. भक्त
पो. एस. ई (रीटार्यड)

वर्ष ६	सोमवार १० दिसम्बर, १९७९	संख्या ८

हम कौन हैं ।
सत्संग हजूर परमदयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 5-8-1979

जेहि कुछ अहा तहां कछ नाहीं"
पंच तत्त तहां नाहीं ॥
ईड़ा पिंगला सुखमन बहऐ ॥
ऐ अबगुन कत नाहीं ॥
तागा तुट्टा गगन बिनस गया ॥
तेरा बोलत कहां समाई ॥
ऐह संसा मोको अनदिन व्यापे ॥
मोको कौन कहे समझाई ॥
जहि ब्रह्मन्ड पिंड ताहि नाहीं ॥
रत्तन हार तहि नाहीं ।
जोड़न हार सदा अतीता ।
ऐह कहीये किस माही ॥
जोड़ी जुड़े न तोड़ी टूटे जब लग होयी बिनासी ॥

काको ठाकुर काको सेवक, को गुरू के जासी ।।
कहो कबीर लिव लाग रही है जहां बसे दिन राती ।।
ऊहा का मर्म ऊहो पर जाने कोह तऊ सदा अवनासी ।

राधा स्वामी !

यह सरदार साहिब, आये हुए हैं जिन्होंने ग्रन्थ साहिब में कबीर साहिब के इस शब्द की व्याख्या के लिए मुझ से कहा । मैं कुछ कहने का अधिकार नहीं रखता । मगर इतना जानता हूं कि इन्सान जब सँसार में पैदा होता है तो उसके अन्तर एक तरह की अकल व बुद्धि आ जाती है । जैसी - २ उसकी प्रकृति होती है वैसे - २ उसके विचार पैदा होते हैं । कई बच्चों को छोटी आयु में ही चोरी, डांके की आदत पड़ जाती है और बड़े होकर वे डांकू बन जाते हैं । कई भक्त बन जाते हैं, कई एंजिनियर बन जाते हैं । ऐसा क्यों होता है ? मेरी अकल काम नहीं करती । इतना कह सकता हूं कि प्रकृति कुदरत अर्थात सृष्टि क्रम द्वारा ग्रहों की चाल के प्रभाव से बनती है और उसके अनुसार हरेक आदमी अपना - २ कर्म करता है । ज्योतिष

बताता है कि फलाँ राशी में आया हुआ है उसके अनुसार ऐसा - २ होगा। देश में यह होगा। तो इस से सिद्ध हुआ कि जो कुछ भी यहाँ हो रहा है किसी शक्ति के अधीन है। क्या गुरु नानक, क्या कबीर साहिब, क्या राधास्वामी, क्या दाता दयाल, क्या फकीर या कोई और हो यह सब अपनी प्रकृति के अनुसार जो कुछ कर गये मजबूरी से कर गये। हमारे ऊपर कोई एहसान नहीं कर गए। अपने बस में कोई बात नहीं मजबूरी है। यह मैं क्यों कहता हूं ? मैं जो कुछ करता हूं किसी पर एहसान नहीं करता। अपनी आत्मा को जानता हूं। मेरी प्रकृति ही ऐसी है मैं ऐसा करने को मजबूर हूं। जैसे मैं विवश हूं ऐसे ही सभी करने को विवश हैं। किसी के बस की कोई बात नहीं।

जब इन्सान पैदा हुआ तो उनमें से कई ऐसे मनुष्य पैदा हुए जिन्होंने यह तालाश की कि परमात्मा कहाँ है ? उन्होंने अपनी अकल से यह देखा कि दुनियां है ? इसका कोई बनाने वाला है। किसी की समझ कुछ आया और किसी ने कुछ समझा। जिस - 2 की समझ में जैसा आया उसने उसे वैसा

बतला दिया । जब तक हमारे में बुद्धि है हमें मानना पड़ता है कि कोई वस्तु है जिससे यह सारा संसार पैदा हुआ है। जिसकी बुद्धि तेज़ नहीं है वह नहीं मानेगा । उसको इस बात का ध्यान ही नहीं है कि बनाने वाला कोई है कि नहीं है । क्योंकि उसके ग्रह जो हैं वह ऐसे हैं । कल सरदार साहिब ने कहा कि इस शब्द का अर्थ बताओ । मैं इसका अर्थ बताने वाला कौन हूं । अपना अनुभव कहता हूं

जेहि कछ यहां तहां कछ नाहीं ।।
पंच तत्त तहां नाहीं ।।

अब देखो ! कबीर साहिब ने कैसे कहा कि वहाँ कुछ नहीं है । तुम ही देखो जब तुम रात को गहरी नींद में सो जाते हो तो क्या तुम्हें यह संसार नज़र आता है । यह भाई बहन, रिश्तेदार कोई तुमको समझ में आते हैं ? ऐसे ही जो आदमी उस मालिक को मिलने के लिए अपने अन्तर में गया वह शरीर को भूल गया । जिस तरह आप गहरी नींद में अपने शरीर को भूल जाते हो या डाक्टर तुम्हें टीका लगा देता है तो तुम्हें वहां शरीर की होश नहीं रहती । डाक्टर शरीर को काटते रहते हैं ।

आदमी होश में होता है मगर उसे पता नहीं। क्योंकि उसकी सुरत उस स्थान में नहीं है। तो वह आदमी जो उसकी तालाश में जाता है वह कहता है कि जो कुछ यहां है वहां नहीं। जैसे जो कुछ यहां है तुम्हारे स्वप्न में नहीं और तुम्हारी गहरी नींद में नहीं। तुम्हें मालूम होता है कि वहाँ नहीं। एक आदमी जो समाधि में वहां चला गया और वहाँ है। उसके लिए दुनियां नहीं है। मगर दुनियां तो मौजूद है। तुम गहरी नींद में गए हुए हो। तुम्हें तो होश ही नहीं। मगर बाकी तो सारे आदमी जागते हैं, काम करते हैं, गाड़ियां चलती हैं, इंन्जन सीटी मारते हैं, सूर्य निकला हुआ है चाँद निकला हुआ है सब कुछ है। मैं नांक कटों में शामिल नहीं हुआ और न सन्तों की हाँ में हाँ मिलाता हूं। जो कुछ मैंने समझा वह यह है कि वहां उसकी अपनी ही चेतनता रहती है। अपना ही आपा रहता है। वह गुरु को, बाप को मां को खुदा ईश्वर परमेश्वर को भूल जाता है। जब उसके सब विचार छूट जाते हैं तो आप उसकी अपनी चेतनता रहती है। उस चेतनपने में क्योंकि उसको यह सँसार नहीं मालूम पड़ता इसलिए वह कहता है कि वहाँ नहीं है। तो जिस खुदा को मैं

ढूंढने के लिए निकला था वह क्या निकला ? कि मैं उसको ढूंढता-२ शरीर को भूल जाता हूं, मन को भूल जाता हूं, प्रकाश को भूल जाता हूं और कभी-२ शब्द को भूल जाता हूं और फिर बाकी क्या रह जाता है वही जो यह कबीर साहिब कहते हैं :-

जेहि कुछ यहां तहां कछु नाहीं
पंच तत्त तहां नाहीं ॥

वहाँ जो असली जगह है वहाँ पांच तत्त हैं या कि नहीं, यह मुझे पता नहीं। जब हम अपने दिमाग के अन्दर गहरी नींद या गहरी समाधि में चले जाते हैं सब कुछ भूल जाते हैं उस समय पांच तत्व हमें मालूम नहीं होते। भासते नहीं हैं। मगर यह कह देना कि वहां वह नहीं हैं मैं यह बात कहने को तैयार नहीं हूं। कबीर साहिब शायद यह कह गए हों मैं नहीं कह सकता। बात यह है कि हम स्वयं इस दुनियां को भूल जाते हैं तो हमें मालूम होता है कि कुछ नहीं है। यह सन्त मत किन के लिए है ? जो इस दुनियां में रहते हुए, इस पांच तत्व के शरीर में रहते हुए, मन में रहते हुए मन से दुःखी है। अशान्त है। कुछ चाहते हैं या देखा देखी बात सुनकर हम

उनके पीछे लगते हैं। मैं लगा था। पहले ठाकुर पूजे क्योंकि ब्राह्मण के घर जन्म था। भाई ने, रिशतेदारों ने कहा ठाकुर पूजो परमेश्वर की पूजा होगी। ठाकुर पूजे। क्योंकि मेरा ख्याल गहरा हो गया था ठाकुर के पास मैं नहीं जाता था मगर अपने ही विचार से ठाकुर अपने दिमाग़ के अन्दर बनाकर उनको स्नान करवाता व खाना खिला देता था। सात दिन तक वह जो असली पत्थर बाहिर पड़े हुए थे उनको मैंने स्नान नहीं करवाया। मगर मैं अपने दिल से स्नान करवाता रहा। तो मेरी मां ने मुझ से पूछा कि तूने ठाकुरों को स्नान नहीं करवाया। मैंने कहा मैं हर रोज स्नान करवाता हूं। कहने लगी सिंहासन पर चलो। जब मुझे सिंहासन पर ले गई तो वहां बहुत मिट्टी जमी हुई थी। फिर वह ठाकुर छोड़ दिये। फिर समझ में आया कि जो कुछ है मेरे मन में हैं। फिर मैं राम और कृष्ण को पूजने लगा फिर एक घटना ऐसी हुई जिसमें मुझे अनुभव हुआ कि यह कृष्ण नहीं है यह मेरा अपना ही मन है। फिर मैं उसको छोड़कर रोने लगा। क्योंकि हिन्दू था विचार मिला हुआ था कि वह अवतार लेते हैं २४ घण्टे रोता रहा। डाक्टरों ने दीवाना कह

दिया। फिर एक स्वप्न था जो दाता दयाल जी के चरणों में ले आया मुझे यकीन हो गया कि मालिक दाता के रूप में है। मैंने उनको मालिक समझकर पूजा, फिर सत्संगियों के तजुर्बों से मुझे आगे अनुभव हुआ। तो वह जो ख्याल था कि मेरा वह मालिक दाता दयाल के रूप में है वह बन्द हो गया। क्यों बन्द हुआ ? जब लोगों की मेरा रूप जाग्रत और स्वप्न में मदद करता है और मैं नहीं होता तो क्या सिद्ध हुआ कि वह लोगों के अपने ही मन का विचार था। तो फिर मैं असली राम को मिलने के लिए विवश हो गया। फिर मन की शक्लें छोड़ जाता हूं। आगे जब चला जाता हूं तो प्रकाश और शब्द के अतिरिक्त और कुछ नहीं। शब्द में रहता हुआ उस चीज़ की तलाश करता हूं जो शब्द को सुनती है और प्रकाश को देखती है। कभी-२ दो चार महीनों के बाद वह अवस्था एक दो मिन्ट के लिए आती है। जहाँ मैं यह कह सकता हूं कि जो कुछ यहां है वहां नहीं है।

'जेहि कुछ यहां तहां कछ नाहीं ॥
पांच तत्त तहां नाहीं ॥

कबीर साहिब ने कैसे कहा यह कबीर साहिब

को पता होगा। मैं कैसे कहता हूं। वह मैंने आपको बता दिया। केवल कबीर साहिब के यह कहने से कि वहाँ यह नहीं है, मैं नहीं मानता कि वहाँ नहीं है। वहां क्या है? कबीर साहिब को या नानक साहिब को या मुझ को या दूसरों को किसी को कुछ पता नहीं। कोई कह ही नहीं सकता कि वहां क्या है। प्रकृति का खेल कोई नहीं जान सकता। इसलिए अपरम्पार बेअन्त कह दिया। "तेरी लीला अपरम्पार कोई न जाने उसका पार।" चूंकि अपने अन्दर ढूंढ़ते 2 यह चीज़ें खत्म हो जाती हैं। बाकी केवल उनका अपना ही आप रह जाता है। इसलिए जब उनको होश आती है तो वे कहते हैं कि वहां कुछ नहीं। वास्तव में वहां वह चीज़ क्या है यह आदमी की बुद्धि ने माना हुआ है। जिस तरह हम सूर्य देखते हैं हम कहते हैं कि सूर्य देखते हैं, हम कहते हैं कि सूर्य पूर्व से निकलता है। यह सब इन्सानी अक्ल का खेल है। इससे क्या लाभ हुआ? मुझको क्या फायदा पहुंचा? जो मैं दौड़ा करता था भागा करता था कि हाय! मेरा राम कहां है। मुझे राम मिल जाये। मेरे पाप धोये जायें। वह मेरी तालाश खत्म हो गई। क्या उस अवस्था में जाकर आदमी

मिल जाता ? नहीं ? अगर मिल जाता होता या कुछ कर सकते होते तो ये बड़े-२ सन्त बीमार न होते। उनकी बेइज्जती न होती। ये सूली पर न चढ़ाये जाते उनको टी० बी० या कैंसर न होता। वे अपनी ही तकलीफों को दूर कर लेते।

मैं किस नतीजे पर आया। क्या कहना चाहता हूं ? बस यह कि ऐ इन्सान ! अगर तू उस मालिक को मिलना चाहता है तो मेरे ख्याल में कभी ही तुम उस अवस्था में थोड़ी देर के लिए जाओगे जहां तुम सब कुछ भूल जाओगे। मगर सारा दिन तो दुनियां में काम करोगे। तो जो दुनियां में काम किया हुआ है या करोगे उसके प्रभाव से तुम कहां बच सकते हो। लाख राम-२ जपो लाख कानों में उँगलियां डाल कर ध्यान करो। इसलिए ऐ इन्सान ! अपनी जाती जिन्दगी के लिए किसी के साथ हेरा फेरी, धोखा फरेब-चारसोबीस मत कर। अगर यह करेगा तो लाख तुम कानों में उँगलियां डालकर शब्द सुनते रहो और इस अवस्था में जाते रहो तुमने जो कुछ किया हुआ है जब तक जीवन है तुम उसके प्रभाव से बच नहीं सकते। अगर मैं यह ग़लत कहता हूं तो दूसरे बड़े-२ महात्मा जो गुरु बने हुए हैं अगर

यह मेरा खण्डन कर जायें तो मैं भाग्यशाली हूंगा। क्योंकि मैं सच्चाई पसन्द इन्सान हूं। Researcher हूं में कोई दावा तो नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है। मैं गुस्ताखी (अशिष्टता) नहीं कर ा। मेरी खोज इन बीते सन्तो कबीर साहिब आदि से कुछ आगे है। सम्भव है उन्होंने लोगों के अधिकार और संस्कार को ध्यान में रखते हुए सच्चाई को पूरी तरह न खोला हो। केवल विशेष-२ शब्द लिखे हैं। दुनियां तो परवाह ही नहीं करती कि यह क्या लिखा हुआ है। वह तो कहते हैं कि यह मूर्खों की वाणी है। यह बुद्धिवादी जो बहुत जानते हैं वे तो कबीर साहिब को अनपढ़ जुलाहा और नानक साहब को कुराहा कहकर उनका खण्डन कर देते हैं। मगर असल में यह सन्त सच्चे हैं। खण्डन के योग्य नहीं है क्योंकि मेरे साथ बीती है।

ईङ्गला, पिंगला, सुखमन वहऐ ॥
ऐ अवगुन कत्त नाही ॥

ईङ्गला, पिंगला, सुष्मना यह योगियों की बड़ी प्रसिद्ध नाड़ियां हैं। जिसमें से विचार जाते हैं। जो विचार हम परमार्थ, नेकी, धर्म, परोपकार के करते

हैं वह दायें तरफ जायेंगे। जो दुनियां के स्वार्थपूर्ण करते हैं वे बायें तरफ जायेंगे और जो आदमी नेकी और वदी दोनों को छोड़कर जब केवल उस मालिक की लगन करता है उसका जो ख्याल व जज्वा है वह सदा सुष्मना यानि बीच की नाड़ी में जायेगा। मगर जब इन्सान उसकी तलाश में निकलता है तो यह तीनों ही खत्म हो जाते हैं। क्योंकि जहाँ हम पहुंचते हैं वहां मन व सूक्ष्म ख्यालात नहीं।

तागा तुट्टा गगन बिनस गया ॥
तेरा बोलत कहां समाई ॥
ऐह संसा मोको अनदिन व्यापे ॥
मोको कौन कहे समझाई ॥

वहां बोलेगा कौन ? जब उसकी अपनी ज़ात रह गई तो बोलेगा किसके साथ। किसी को क्या कहेगा, क्या करेगा। कवीर साहिब जी कहते हैं यह संशय मुझे व्यापता है। क्योंकि वहां जब मैं जाता हूं तो वहां कुछ भी नहीं होता और मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं तेरा संशय क्या हैं ? किसी समय वाणियां सुन कर संशय पैदा हो जाता है। मगर समझ में आ रहा है कि वह जो अवस्था मैंने कही है कि प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है वह एक

Supermost element है। सूक्ष्म से सूक्ष्म एक तत्व है। जैसे हवा नज़र नहीं आती मगर तत्व है, अकाश तत्व है। तो मैं कौन हू ? एक तत्व है उसमें हिलोर होती है तो उसमें प्रकाश और शब्द के पैदा होने से एक चेतनपना पैदा होता है। वह जो चेतनपना है उसका नाम है सुरत। जब शरीर, मन और प्रकाश ये खत्म हो जायेंगे यानि वह चीज़ इनसे ऊपर चली जायेगी तो कहाँ समायेगी ? वह न पहले थी और न अब है। सुरत शब्द से पैदा हुई थी फिर सुरत से शब्द। तो मेरा संशय तो इस तरह से निवारण हुआ।

जहि ब्रह्मण्ड पिडत हि नाहीं
रचन हार तहि नाही ॥
जोड़न हार सदा अतौता ।
ऐह कहिये किस माही ॥

अतीता यानि की unattached जो असली वस्तु है वह किसी चीज़ से unattached है। उसमें हरकत होती है। जहाँ हरकत होती है वहां अवाज़ और प्रकाश का होना प्रकृतिक बात है। यह साईंस है। हमारे शरीर में हरकत है तो यह डाक्टर टूटियां

लगाकर देखते हैं कि तुम्हारे अन्दर क्या है ? मन के ख्यालात में हरकत होती है। कहीं घण्टा बजता है, कहीं कुछ होता है। जब ऊपर चला जाता हूं तो वहां न शब्द है, न प्रकाश है उसे ज़ात कहा जाता है। कोई उसे राम कहता है। कोई अपना आप कह देता है, कोई उसको राधास्वामी या अकालपुरुष या ला इलाहा इललाह कह देता है। बात एक है मगर बगैर स्वयं देखे हुए हम दूसरों की बातें सुनकर आपस में झगड़ा करते हैं। एक ने कहा खुदा तो दूसरों ने ईश्वर कहा, अब दोनों झगड़ पड़े।

जोड़ी जुड़े न तोड़ी टूटे, जब लग होयी विनासी ॥
काको ठाकुर, काको सेवक, को गुरू के जासी ॥

जब आदमी वहां चला जाता है न कोई स्वामी है, न कोई सेवक है न वहां खालिक है न मखलूक है, न कोई गुरु है न चेला है। यही राधा स्वामी मत कहता है। जेठ महीने में।

जेठ महीना, जेठा भारी,
जीवन हृदय तपन करारी
सन्त दयाल जीव हितकारी।

क्या हित करते हैं सन्त ? पुत्र देते हैं ? इन

सन्तों के अपने पुत्र न हुए तुम्हें कहाँ से देंगे। वे केवल भेद देते हैं। वह तुम्हें तुम्हारा अपना ही भेद देते हैं।

"सुन री सुरत, तू अपना भेद
तू मुझमें थी सदा अभेद।

जिस तरह मक्खन दूध में मौजूद है मगर नज़र नहीं आता। मगर जब दूध जमाकर बिलोओगे तब मक्खन आयेगा। ऐसे ही हम सबके सब जो जीव जन्तु हैं यह उस चीज़ में ऐसे मौजूद रहते हैं जैसे मक्खन दूध में। जब उसमे हरक़त यानि Evolution आती है तब शब्द और प्रकाश पैदा हो करके उसमें सुरत पैदा हो जाती है। ज्यों-2 वह नीचे उतरती जाती है उसी सुरत का नाम आत्मा, उसी सुरत का नाम मन और उसी सुरत का नाम जीव। वही जब उल्ट कर वापिस जहां से आई थी वहाँ को चली जाती है तो उसी में अभेद हो जाती है। यह है जो मैंने समझा। मगर मैं यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने समझा है यही ठीक है। मगर ऐसी बाणियां जो कबीर साहिब ने या ग्रन्थ साहिब में लिखी हुई हैं उनको पढ़ने से, सुनने से यक़ीन आता

है कि मेरा जो अनुभव है यह ठीक है। मैं इसलिए इन वाणियों को सत नहीं कहता कि यह कबीर साहिब या नानक साहिब या दाता दयाल या स्वामी जी की लिखी हुई हैं बल्कि इसलिए कई शब्दों को सत मानता हूं कि मेरे साथ बीती हुई है और जहां जो बात मेरे साथ नहीं बीती में निर्भय होकर खण्डन कर जाता हूं। किसी की परवाह नहीं करता। न मुझे मौत का डर है और न ज़िन्दगी चाहता हूं। जो सच्ची बात मेरे अनुभव की है वह कहता हूं। मगर दावा नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है। शायद में ग़लती पर हूं। इस क़ुदरत के भेद को किसी ने क्या पाया और क्या न पाया।

"कहो कबीर लिव लाग रही है जहां बसे दिन रातीं ॥
ऊहा का मर्म ऊही पर जाने ओह तऊ सदा अवनासी ॥

अब इस शब्द से मेरा तजुर्बा जो था वह सिद्ध हो गया। मैंने क्या परिणाम अपनी जिन्दगी में निकाला कि मैं कौन हूं।

"लब खुले और बन्द हुए, यही राजे जिन्दगानी है"

एक लब इस शरीर का, एक मन का, एक आत्मा का, एक सुरत का। जब यह हरकत होती है

तो लव खुल जाते हैं। जब खत्म हो जाती है तो बन्द हो जाते हैं। यही कबीर साहिब जी कहते हैं कि मेरी लव वहां लगी हुई है। किस में ? वह आद घर जहाँ अपनी ज़ात है मगर उसका भेद नहीं मिला। वह अविनासी है यही मैं कहता हूं। आज मुझको खुशी है कि जो कुछ मैंने समझा है व जो मेरा अनुभव है वह ठीक है। इस शब्द में कबीर साहिब कहते हैं कि मुझे पता नहीं लेकिन इसी तरह का कबीर साहिब का दूसरा शब्द है, जिसमें उन्होने स्पष्ट कह दिया है।

सखिया वा घर सबसे न्यारा, जहां पूरण पुरुष हमारा।
जहां नहीं सुख दुख, सांच झूठ नहीं, पाप न पुण्य पसारा॥
नहीं दिन, रैन, चान्द न सूरज, बिन ज्योति उज्यारा।

बात को समझो वह क्या है। सब कुछ है और कुछ भी नहीं। किसी की कोई ताकत नहीं है कि वह कह सके कि मालिक क्या है ? आदमी ढूंढने को तो निकलता है, वह क्योंकि अपने ही ख्यालात को भूल जाता है। इसलिए वह कहता है :-

"सखिया वा घर सबसे न्यारा, जहां पूरण पुरुष हमारा।
न जहां ज्ञान ध्यान, नहीं जप तप, वेद कतेब न वाणी॥

करनी धरनी, रहनी गहनी. यह सब वहां हैरानी ।।
धर अधर, न बाहर भीतर, पिण्ड ब्रह्मडं कुछ नाहीं ।।
पांच तत्व गण तीन नाहीं, तांह साखी शब्द न तांहीं ।।

तुम देखो जब तुम गहरी नींद में होते हो वहाँ जाप करते हो, ध्यान करते हो, सब कुछ भूल जाते हो। करनी, धरनी, रहनी सब खत्म है।

मूल न फूल बेल नहीं बीजा, बिना वृक्ष फल सोहे।
ओहंग, सोंहंग, अर्ध उर्ध नहीं स्वासां लेख न कोये ।।
नहीं निर्गुन, नहीं सर्गुन भाई, नहीं सूक्ष्म स्थूलम ।।
नहीं अक्षर नहीं अवगत भाई, यह सब जग के भूलम ।।
जहां पुरूष तहां कुछ नाहीं, कहें कबीर हम जाना ।।
हमरी सेना लखे जो कोई, पावे पद निर्वाना ।।

जो कुछ कबीर साहिब ने वहां लिखा और इस शब्द में लिखा मैंने अनुभव किया। अब आप सोचो क्या करना चाहिए। सत्सँग में जाकर बात को समझो यह यक़ीन करलो कि हम कौन हैं। एक तत्व है उसमें हरकत हुई हम बन गए। हम इस पृथ्वी के या मन के चक्र में जो सुख का अनुभव करते हैं उसके पीछे दौड़ते हैं। अगर बात पर यकीन

रखा जाए कि हम कौन है ! अभेद थे जब उसकी मर्ज़ी होगी ले जायेगा । तो इस दुनियां में खुश रहो, बेफिक्र, बे-गम रहो । किसी की मदद करो । हंसो खेलो, हाय-२ मत करो । गुरु और मालिक तुम्हारा अपना ही ख्याल है । तभी तो कहते हैं कि सन्त ईश्वर और परमेश्वर के पैदा करने वाले होते हैं । इसका मतलब यह होता है कि इन्सान जो आस करता है वह सोचता है कि मेरे अन्तर से ही ख्याल निकला था । मैं आद हूं शब्द पीछे से है । प्रकृति की बजह से आया, प्रकाश की बजह से आया । इस ख्याल से उन्होंने यह कहा । आगे मुझे भी सन्देह हुआ करता था मगर अब नहीं ।

उन्होंने यह प्रश्न किया कि इस शब्द का अर्थ कर दो । मैंने कर दिया । यह तो है बड़ी ऊँची बात । दुनियां की बातें बता देता हूं । हम तुम जो कुछ भी हैं यह प्रकृति की रचना में बनाए गए हैं । यह प्रकृति का खेल है । मौज में आता है दुनियां बनती और बिगड़ती रहती है । जिनको इस जिन्दगी में ज्ञान हो गया कि मैं कौन हूं उनका मैंपना या अज्ञान

खत्म हो जायेगा। बार-२ जन्म नहीं लेंगे और जिसकी 'मैं' नहीं मरी वह जन्म लेता रहेगा। जब तक कोई सेवक है स्वामी का या चेला है और किसी को गुरु मानकर पूजता रहता है उसके मन की 'मैं' या अज्ञान नहीं जायेगा। उसकी 'मैं' Ego कहां मरी ? वह बिल्कुल नहीं मरेगी और इस 'मैं' को कोई मारना नहीं चाहता। क्योंकि इस' मैं' में और मेरेपने में आनन्द है। जैसे मेरी पत्नी है, मेरा पोता है। आज मैं यहां आया तो एक आदमी खड़ा था और पोते को लेकर बड़ा खुश था। मैंने कहा यह कौन है ? कहने लगा पोता। मैं दिल में हंसा। अपने आपको जो दुनियां में फंसाते हैं उनका मन नहीं मरेगा। मालिक को समझकर काम करो और अपनी ड्यूटी पूरी करो मगर मोह में न फंसो। मैं यह नहीं कहता कि पोतों के साथ प्रेम न करो। अपने स्वार्थ के लिए करो। सब कुछ हो मगर दिल नहीं देना। सारा भेद जो है वह यही है बाकी कुछ नहीं। दुनियां में राजा जनक की तरह रहो। केवल बात को समझो। दुनियाँ में लेना देना एक दूसरे से व्यवहार के बिना कुछ नहीं हैं। 'मैं' कई तरह की है। शरीर की मन की, आत्मा की और सुरत की।

शरीर की 'मैं' तो मैं पहले ही जानता था क्योंकि जन्म से वैराग्य था । मन की 'मैं' तुम लोगों ने छुड़ाई । बस केवल इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता जो कुछ किसी को मिलता है उनके अपने मन की 'मैं' का खेल है । जैसा-२ किसी को संस्कार मिला है सब संस्कार का खेल है । जबसे मुझे मन के रूप की समझ आ गई मेरी मन की 'मैं' मर गई ।

अपने मन को अपने अन्दर सम्भालो । बात को समझकर चुप रहना यह सन्तों का मार्ग है । दुनियां में रहते हुए सारे काम करो । सेवक भी बनो, भाई, पति, स्त्री, पोते, बाबा भी बनो । मगर केवल मतलब यह है कि बात को समझ कर फंसो नहीं । मेरी समझ में तो यही कुछ आया है । अपने बस में कुछ नहीं । अगर मेरे बस में होता तो मैं मुड़कर इस शरीर में न आता । प्रतिदिन कोशिश करता हूं कि ऊपर जाकर वापस न आऊं मगर फिर आ जाता हूं । तो क्या मेरे बस में है ? मेरे बस में नहीं है । न ही इन सन्तों के बस में रहा । इसलिए नीयत को साफ रखकर दुनियां में रहो । काम करो,

एक दूसरे की मदद करो। पहिले अपना परिवार फिर गुरु। जितना हो सके आपस में प्रेम का जीवन गुज़ारो ताकि तुम्हारा जीवन सुखी रहें। याद रखो कि हमने यहां हमेशा नहीं रहना। कोई १० वर्ष के लिए कोई 30 वर्ष के लिए आया। अगर यह बात इन्सान के दिल आ जाए तो फिर मेरे विचार में वह गुनाह भी नहीं करेगा। मनुष्य चोला बड़े भाग्य से मिलता है। अन्त में जो जिसको याद करता है उसके अनुसार जन्म मिलता है।

मालिक एक है। फक़ीर चन्द को पूजने से कुछ नहीं बनेगा। फकीर चन्द की बात को समझने से तुम्हारा काम ठीक बनेगा। गुरु जो कहता है, जो ज्ञान देता है। उसको अपनाने से काम बनेगा। यह इज्जत करना, मत्थे टेकने संसार का व्यवहार है। हमारे यहां यह है कि हम पावों को मत्था टेकते हैं। मैं अमरीका गया वहां प्रेम के जज़्बे में मुंह चूमते हैं। और वहां तंग आ जाता हूं। यह केवल अपने-२ देश की सभ्यता है।

ऐसा आदमी जो वहां पहुंच जाता है कुछ कर सकता होता तो मैं मान लेता कि वह कुछ बन

गया। बड़े-२ सन्त जिन्होंने ऐसी-2 बाणियां लिखी हैं जब मैं उनकी पिछली आयु की जिन्दगी देखता हूं अपनी बीमारी को दूर न कर सके इनके साथ लड़कों ने बुरा व्यवहार किया। औरतों से उनकी नहीं बनी पुत्र और बीवी को ठीक न कर सके तो मानना पड़ता है कि कोई कुछ नहीं कर सकता। कर्म का बदला सबको भोगना पड़ता है। साधन अभ्यास यह समझ की बात है और कुछ नहीं। यह ज्यादा मेहनत का काम नहीं है समझ का काम है।

नोट :— कबीर साहिब ने तो कह दिया कि वहां कुछ नहीं। मैं अपने अनुभव के आधार पर यह कहता हूं कि अगर वहाँ कुछ नहीं तो कुछ नहीं से कुछ पैदा नहीं हो सकता। Nothing से Something नहीं बनता। वह कबीर साहिब की अपनी Resarch है और जहाँ तक उनके तलाश है वह ठीक कहते हैं। वहां जो कुछ है उसका हमें पता नहीं लग सकता। ज्ञान ही नहीं हो सकता। क्योंकि हम तो आप ही गुम हो गए। जैसे मक्खन दूध में गुम हो सकता है।

मैंने यह जानते हुए कि सन्त मत की आम

दुनियां अधिकारी नहीं फिर भी सच्चाई से गुरु की आज्ञा बस काम किया। सोचता हूं कुछ फायदा हो! अगर पढ़े लिखे आदमी के दिमाग में यह हक़ीकत बैठ जाए तो उनका मज़हबी झगड़ा दूर हो सकता है। मैंने ख्याल की फिलोसफी को इसलिए खोल दिया है ताकि जो आदमी अपने घर में, देश में, समाज में, सुख चाहते हैं वे अपने ख्याल को कल्याणकारी बनाएं। और यही वेद मार्ग है "शिव संकल्पं अस्तु"!

मेरा अनुभव है कि सन्तों की शिक्षा भविष्य में अर्थात आने वाले ज़माने में मानव जाति को लाभ पहुंचाएगी। मगर इससे पहले काफी मुसीबतें आयेंगी।

सब को राधा स्वामी।

सत्संग हजूर परमदयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 9-9-79

जिन को चाह राम की साधो, राम उन्हें मिल जाते हैं ।
राम दास के पास राम है, और नहीं कोई पाते हैं ॥
वाद विवाद में राम नहीं है, राम न पूछ पेखी में ।
राम दास ने राम को पाया, सहज ही देखा देखी में ॥
राम नहीं तीरथ में रहते, राम बरत के साथ नहीं ।
राम दास के हाथ राम है, औरों के वह हाथ नहीं ॥
बुन्द में सिधुं सिधुं में बूंदे, बुन्द सिधुं दोऊ एक हुये ।
बुन्द सिधुं का झगड़ा मन में, उन के लिए अनेक हुए ॥
राधा स्वामी सतगुरू आये, भेद दिया पूरा पूरा ।
जो कोई भेद भाव को मेटे, सतगुरू का सेवक पूरा ॥

मैं सात वर्ष की आयु से राम को मिलने निकला । मेरी किस्मत या मालिक की मौज मुझे दाता

दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई उन्होंने मुझ को ये संत मत दिया और अभ्यास दिया। मैं ने ये शब्द सुना मैं अपनी आत्मा से प्रश्न करता हूं फकीर चन्द ! क्या तुझे राम मिल गया ? संत कह देते हैं कि दास को राम मिल जाते हैं। मिलता होगा ! मगर पहला प्रश्न जो मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं वो यह है कि तुझ को राम मिल गया ?

जिसको चाह राम की साधो राम उन्हें मिल जाते हैं
राम दास के पास राम हैं, और नहीं कोई पाते हैं।

वो कहते हैं राम रामदास के पास रहता है। एक तो राम का मिलना ये समझ लो कि मैंने दाता दयाल को राम का या मालिक का अवतार समझा एक तो वो मिल गये। इसका अर्थ ये भी समझ में आता है। मगर मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीर चन्द, मरजावेगा, चार दिन की तेरी जिन्दगी है, अन्त यहाँ से तो चले ही जाना है, यहां बैठे नहीं रहना, अगर झूठे मान, झूठी इज्जत, झूठी दौलत के लिए पाखण्ड जगावेगा, आगे क्या हाल होगा। मुझे क्या पता। जो कर्म मैंने किये हुए हैं उनका

फल मुझको मिलेगा। इस वास्ते मैं डरता हूं और सच्चाई को ब्यान करता हूं। अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीर चन्द ! तू राम को मिलने के वास्ते बचपन की आयु से निकला था, बता तुझे राम मिल गया ? दाता कहते हैं :-

राम दास के पास राम है और नहीं कोई पाते हैं

क्या कहते हैं जो रामका दास है उसके पास राम रहता है। दूसरे किसी के पास नहीं रहता। क्या मतलब हुआ इसका ? यह ख्याल कि राम है मेरे मन से निकला था। अगर मेरे मन में राम न होता तो राम का ख्याल कैसे निकलता ? तो जिस आदमी के दिल में उस राम से मिलने की चाह है वो राम से मिलने की चाह कहां से पैदा हुई ? उसके अपने मन के अन्दर से पैदा हुई इस वास्ते राम या गुरु या परमात्मा या भगवान कुछ कह लो, अगर किसी को मिलता है तो जिस आदमी के दिल में चाह पैदा होती है वह उस आदमी के अपने अन्तर में होता है। उसको ज्ञान नहीं होता कि वो उस के पास है। इस लिए वह राम को ढूंढ़ता है। हकीकत में वो राम उन के अपने मन से निकलता है। जिन को राम की

बिल्कुल कोई पता नहीं होता तो सिद्ध हुआ कि मनुष्य जो कुछ चाहता है वह उसके अपने पास पहले ही है। इसी प्रकार मनुष्य जिस राम, सत गुरु या अल्ला, कुछ कह लो, की तलाश करता है वह बाहर नहीं है वह उसके अपने ही मन के अन्दर है। दूसरे अर्थ में उसका अपना मन ही राम है। क्योंकि जो लोग मुझ फकीर चन्द को गुरु मानकर अपने अन्तर पैदा करते हैं, मैं तो होता नहीं। तो वो जो फकीर चन्द उन के अन्दर पैदा हुआ और उनका काम कर गया वह कौन निकला ? उनका अपना मन निकला। और तो कोई नहीं था ? यही एक राज था भेद था, जिसको भारत वर्ष में किसी मत मतान्तर ने खोल कर नहीं बताया इशारा जरूर सब ने किया मगर खोल के नहीं बताया। खोल के बताने में नुकसान भी है, इसको मैं जानता हूं। आदमी को जो आनन्द मिलता है ये अज्ञान में है। ज्ञान में आनन्द नहीं, अज्ञान में आनन्द है। मगर मैंने इसलिए खोला कि इस अज्ञान के कारण इन्सानी नसल आपस में बट गई, इसी अज्ञान की बजह से देश के विभाजन समय क्या कुछ नहीं हुआ ? सिर कटे। तुम लोग जो पाकिस्तान से आए हो, तुम्हारा हाल रास्ते में क्या

हुआ ? जो मुस्लमान यहां से गए हैं, उनके साथ क्या बीती ? क्यों हुआ, क्योंकि उन को अज्ञान था। हिन्दुओं में अज्ञान था और मुसलमानों में अज्ञान था । उस हालत को देखकर चूंकि मेरे जिम्मे ड्यूटी है ।

तेरा रूप है अद्भुत अचरज तेरी उत्तम देहा
जग कल्याण जगत में आया परम दयाल सनेही

इस लिए मैंने उस भेद को जो कबीर साहब ने भी धर्मदास को बता कर छुपाकर रखने को कहा और राधा स्वामी मत वालों ने भी कह दिया ।

संत बिना कोई भेद न जाने,
वो तोहे कहे अलग में ।

मैं ने वो जो पर्दे का तरीका, क्योंकि दाता ने कहा था शिक्षा बदल जाना, उसको तोड़ दिया ताकि जो दुनियां के समझदार आदमी हैं वे इस मज़हबी दुनियां और अज्ञान के चक्कर में आकर इन के आपस में घृणा, ईर्षा और झगड़े न हो। दूसरी गद्दियों की तरह अगर मैं भी इस बात का परदा रखता, तो आज में लाखों किरोड़ों का मालिक होता। आज जो ये शब्द पढ़ा गया, ये मेरे ऊपर ही घटता है क्यों-

कि मैं राम को मिलने निकल. था, अगर मैं राधा स्वामी मत या कबीर साहिब की पुस्तकें पहले पढ़ता तो मैं धर्म से कहता हूं कभी भी संत मत में शामिल न होता। प्रत्येक आदमी को अपने अपने मज़हब की टेक होती है। मैं हिन्दू था मुझे ब्राह्मण पने की टेक थी और इन राधा स्वामी मत और कबीर साहब की बाणियों ने कहा है कि हिन्दू भी भूल गये, मुसलमान भी भूल गये सूफी भी भूल गये। बुध जैन और वेदांति सब ही भूल गये। इन्हों ने सब की ऐसी तैसी फेरी। तो मैं रोया करता था कि मैं कहां फँस गया। वह क्या चीज़ है जो यह संत मत बताता है। मगर अब मैं कहता हूं कि जो कुछ इन्हों ने कहा बिल्कुल ठीक है।

जिन को चाह राम की साधो राम उन्हें मिल जाते हैं।
राम दास के पास राम है, और नहीं कोई पाते हैं।

संत मत ऐसा क्यों कहता है ? क्योंकि वह राम का दास बन कर याद करता है तो राम कहां से निकला। ऐ इन्सान ! तू राम को बनाने वाला है। ऐ इन्सान, तू अपने ही अज्ञान से व अपनी ही दुनियां की इच्छाओं के लिए, या अपने ही लाभ के

लिए राम को याद करता है। वह बाहर तो है नहीं। वो तो तुम्हारे अन्तर रहता है। इस का प्रमाण मुझे तुम लोगों से मिला, लोग मुझे गुरु समझ कर या कुछ समझ के याद करते हैं उन के अन्तर मेरा रूप प्रगट होता है और उनके काम कर जाता है। तो तुम मेरे पैदा करने वाले हुये कि न हुए ? मैं तो गया नहीं, ये मुझे पता है। तो मुझे यकीन होना चाहिये कि फकीर चन्द को पैदा करने वाले सत् संगी थे। तभी तो मैं कहता हूं कि इन आजकल के महात्माओं, गुरुओं, मज़हब वालों और पंथ वालों ने हम को अज्ञान में रखकर लूटा है और मूर्ख बनाया है और हमें धोखा दिया जाता है। नाम ले जाओ, गुरु तुम्हारे सारे कर्म ले लेता है। हम लोग इस बात को सुन कर पागल हो कर जा कर नाम ले आते हैं और फिर यह यकीन रखते हैं कि हम ने जितने पाप किये हैं गुरु ने ले लिए। मैं निर्भय आदमी हूं अपनी आत्मा को साफ रखने और तुम लोगों को सच्ची बात बताने के लिए बिल्कुल सच्ची बात कहता हूं मगर सच्ची बात कही जाये तो सुनता कोई नहीं बल्कि मूर्ख बनने में मज़ा लेते हैं और खुश होते हैं। मैं भी ऐसा ही किया करता था, दाता से

वाद विवाद में राम नहीं, राम नहीं पूछा पेखी में
राम दास ने राम को पाया, सहज ही देखा देखी में

और फिर क्या होता है ? सरलता से राम पा लिया। देखा देखी का अर्थ है मेहनत और कोशिश नहीं करनी पड़ी, मैं अगर शुरू से ही गुरुमुख होता तो मैं इतनी मेहनत न करता, इतना अभ्यास न करता। गुरु के वचनों पर विशवास नहीं था। अगर होता तो मैं इतनी मेहनत क्यों करता ? अब ये तुम लोगों से मुझे पता लगा कि जिस राम को ढूंढ़ता था वह तो मेरी अपनी ही ज़ात है, मेरा अपना ही आद है, अपना ही आप है, परमतत्व है। वो ही राम है। कोई उसे अल्ला कह देता है, कोई राम कोई अनामी या राधा स्वामी कह देता है। कोई कुछ कह देता है। अपना अपना ख्याल है शब्दों के जाल का खेल है।

राम नही तीर्थ में रहते, राम बरत के साथ नहीं
राम दास के हाथ राम है, औरों के वो हाथ नहीं

कितना साफ है, तो तुम लोग, अगर कोई उस मालिक को मिलना चाहे, तो उसका इलाज क्या है ? राम को मिलने की चाह अज्ञान है भरम है, संशय है। किसी पूर्ण पुरुष के सत्संग में जाओ उसके सत्संग

के बचनों से तुम को असल और सच्चाई का पता मिलेगा। अगर तुम को अशांति है तो क्यों ? क्योंकि तुम्हारे मन में दुनियां का मोह है। मैं अफसोस करता हूं मैं ऊंचा बोलता हूं। क्यों ? क्योंकि तुम्हारे मन में दुनियां का मोह है। प्रत्येक आदमी मेरी बात को अक्ल से तो समझ जायेगा मगर अमल से नहीं समझेगा। जब तक उसको पूर्ण वैराग्य नहीं है, जिस को दुनियां की चाह है, दुनियां की आशाऐं हैं, दुनियां के पीछे फिरता है, वह लाख कहता फिरे राम मेरे पास हैं, उसके मन को चैन नहीं है। अपने मन के अन्दर दुविधा में रहेगा। कभी दुखी रहेगा, कभी सुखी हो जायेगा। इस लिए ये सन्तों की शिक्षा सब दुनियां के लिए नहीं है। और इस संसार में कोई किसी का नहीं है सब अपने मतलब के साथी हैं। अब मैं यहां सत्संग कराता हूं, कोई तुम पर एहसान करता हूं ? एक तो अपना कर्तव्य पूरा करता हूं। दूसरे चार पैसे तुम लोगों से इक्टठे करता हूं। क्षमा करना मैं बात सच्ची कहतां हूं। अब मैं २८ तिथि को बाहर जा रहा हूं। २५ दिन बाहर दौरे पर रहूंगा, मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं तू बाहर क्यों जा रहा है ? मेरी आयु देखो ९३ वर्ष की है।

मन्दिर के लिए पैसों के लिए जा रहा हूं। ये मेरे खोटे कर्म थें पिछले जो मैं यहां फंस गया मन्दिर बना के। मगर एक ही खुशी है कि मैं अपने लिए कुछ भी नहीं करता और दूसरे ये कि सच्चाई ब्यान करता हूं। जब सब आदमी स्वार्थ के लिए हैं तो मैं भी स्वार्थ से खाली नहीं, केवल मेरा स्वार्थ ये है कि मेरी अपनी ज़ात के लिए कुछ नहीं वरना स्वार्थी तो मैं भी हूं।

बुन्द में सिंध सिंध में बुंद, बुँद सिंध दो एक हुए।

जब यह ज्ञान हो जाता है तो क्या हो जाता है? जिस प्रकार समुद्र बूंदों का मेल है। बहुत सी बूदें इकट्ठी होती हैं। वह बूंद अपने अज्ञान से अलग हो गई, जब उसको यह यकीन हो जाता है, ज्ञान हो जाता है, समझ आ जाती है, फिर बूंद सिंध में मिल जाती है अर्थात बूंद और समुद्र एक हो जाते हैं। अपने अज्ञान की वजह से हम अपने आप को मालिक से अलग समझते हैं। अज्ञान का पर्दा है। जब अज्ञान का पर्दा उठ गया और यदि सच्चाई पसन्द मनुष्य है तो वह बूंद जो जुज है, हिस्सा है कुल में मिल जाती है। oneness आ जाती है। एक तत्व ह जाता है। एक हो जाते हैं फिर—

बुंद में सिंध सिंध में बुंद, बुंद सिंध दो एक हुए
बूंद सिंध का झगड़ा मन में, उन के लिए अनेक हुए

ये बूंद और सिंध का झगड़ा मन में है। जब मन ने भेद को समझ लिया द्वैतपन जाता रहा। ये मेरी समझ में नहीं आता था। मैं ने बड़ा प्रेम किया है दाता से, जब मैं प्रेम करता था और उन को राम समझ के बाहर पूजता था, तो मुझे लिखा करते थे।

क्यों भरमा फकीर क्यों भरमा फकीर,
तू काहे दीवाना हो गया
सत संग में आ सत संग में आ,
अब तू मस्ताना हो गया।

इस वासते दुनियां में सत् संग की महिमा नाम से अधिक है। क्योंकि सत्संग से ही नाम मिलता है। मगर तुम लोगों ने ये समझा हुआ है कि सत् संग में जाओ तो गुरु तुम को बोलेगा कि फलाँ वर्णात्मिक नाम का सुमिरण किया करो, तुम लोगों ने नाम को ये समझा हुआ है। जिस तरह तुम्हारे छोटे बच्चों के लिए पहाड़े हैं इसी प्रकार सुमिरण ध्यान, भजन जो हम करते हैं ये भी पहाड़े हैं। स्वामी जी ने कहा है।

बिन सत संग जो शब्द में पचते वो भी मूर्ख जान

जो सत् संग नही करते और केवल शब्द का ही अभ्यास करते हैं, स्वामी जी कहते हैं कि वो भी मूर्ख हैं। मगर शर्त ये है कि सत् संग कराने वाला पूरा हो। हम लोग तो सत्संग इस लिए करते हैं कि हमारी सभा बन जाये। लोग मेरी कदर करें। लोग मेरा मन्दिर बना दें, लोग मेरा ये कर दें, लोग मेरा वो कर दें। हम लोग सब इसी मतलव के लिए काम करते हैं।

राधा स्वामी सत् गुरू आये, भेद दिया पूरा पूरा।

जब कभी मैं अपने आप को कहता हूं कि मैं अनामी धाम से अवतार ले के आया हूं तो मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तू अंहकारी तो नहीं हो गया ? नहीं, केवल मैं ही अनामी धाम से नहीं आया सब दुनियां ही वहां से आई है। हमारा आद ही वह अवस्था है। किसी ने अनामी धाम कह दिया किसी ने राम कह दिया बात एक ही है। तो हम सब वहां से आये हुए हैं। तो मैं क्या करता हूं क्योंकि गुरु के रूप में काम करता हूं मैं दिखावे का गुरु नहीं बना और गुरुओं की तरह नाम नहीं देता। जो मैं मुंह से कहता हूं

मेरा यही नाम दान है। जिसकी बात समझ में आ गई लाभ उठा लिया।

राधा स्वामी सत गुरु आये भेद दिया पूरा पूरा।

अब आप समझ लो कि मैं भेद पूरा देता हूं या नहीं देता हूं। कोई बात छुपा कर नहीं रखता। किसी ज़ाती मतलब के लिए कुछ भी नहीं करता। कोई ज़ाती गरज़ नहीं है। ये ठीक है कि मन्दिर में मुझे पैसा चाहिये मगर मैं हेर फेर करके बात नहीं करता कोई दे चाहे न दे। बात सच्ची कहता हूं इस लिए मैं अपने आप को राधास्वामी दयाल, सत कबीर और गुरु नानक कहता हूं। ये नहीं कि उन की रूह मेरे अन्दर आई हुई है। बल्कि उनकी शिक्षा को मैं ने समझा है। जो कुछ उनका भाव था वह मैं समझ गया और वो आप को बताता रहता हूं।

ये तो हुआ परमार्थ का सत् संग, अब तुम हो दुनियांदार, तुम को परमार्थ से कोई मतलब नहीं। कोई कोई है जिस को राम से मतलब होगा, तुम दुनियांदार हो तुम दुनियांदारों के लिए मैं एक आसान तरकीब बताता हूं कि तुम अपने ख्याल को ठीक रखो, अपना भला चाहो, अपने परिवार का भला

तुम आए हो मालिक करे तुम्हारी इच्छा पूरी हों। इस के सिवाय मेरे पास कुछ नहीं है। न मैं कुछ कर सकता हूं। सच्चे बनो, ध्यान करो और मांगा करो। अपनी शक्ति के अनुसार व्यय किया करो, आय से अधिक खर्च मत करो।

लोक लाज काज बिगाड़ा री
मोहे जग फंदा डाला री

लड़कियों की शादी पर मां बाप करज़े उठाकर व्यय करते हैं और पीछे से रोते हैं। करज़े से बचो। अगर किसी से कहो तू औरत की कमाई खाता है, औरत की कमाई खाना बुरा शब्द है, उसे बुरा लगेगा। मगर आज कल के नौजवान लड़के जो जहेज़ मांगते हैं ये स्त्री की कमाई नहीं खाते तो क्या करते हैं ? जो लड़का अपने सुसराल से दौलत मांगता है वो औरत की कमाई खाता है। सुसराल से पैसा मांगना बड़ी शर्म की बात है। मैं अपने घर की बात बताता हूं। मुझे मज़हबी दुनियां का ख़बत था मैं टीका सहिय यजुर्वेद पढ़ना चाहता था। दस रु० मूल्य था। मां से कहा दस रु० दे दे। मां ने कहा मेरे पास नहीं हैं। तो मैं ने अपने सुसराल

वालों को चिट्ठी लिखी कि मुझे यजुर्वेद चाहिये दस रु० भेज दो। मां को बताया कि मैं ने अपने सुसराल वालों को चिट्ठी लिखी है कि दस रु० भेज देवें। मेरी मां ने अपना सिर मेरे पावों पर रख दिया और कहा बच्चा, हमारी इज्ज़त रख। अगर ज़रूर ही मंगवाना है तो ये ले। उसने अपने सुहाग की नथ उतार कर मुझे दे दी और कहा, गिरवी रख कर रु० दस ले आ। जब वेतन आयेगा तो दस रुपये उस को दे देंगे। वो ज़माना भी था, और आज का ज़माना क्या है। लड़कियों या औरतों को मज़बूर करते हैं कि जाओ अपने मां बाप से रुपये लेकर आओ। अब देखो वो समय भी था, कौन औरत है, जो अपने सुहाग की नथ दे देती है और मैं भी बे समझ था। सुनार के हां नथ रख दी और दस रुपये लेकर वेद ले आया। जब वेतन मिला तब छुड़ाई, फिर जब मैं पंथ में आ गया तो वो वेद मैंने दाता दयाल को दे दिया, आज मैं पश्चाताप करता हूं कि मैं मां की नथ लेकर वहां दे आया। दूसरी मिसाल और सुनो। १९११ में मेरी दूसरी शादी हुई। मेरे सुसर ने अपनी लड़की का संकल्प मुझ को दे दिया। मैं ने ले लिया, फिर उस ने जहेज़ का

संकल्प किया । मुझे कहा हाथ कर । मैं ने कहा मैं नहीं करूंगा, मेरा बाप पीछे बैठा था उसने मेरी पीठ में मुक्का मारा, मैं ने कहा पिता जी, मारो या जो चाहो करो मैं जहेज़ का संकल्प नहीं लूँगा । एक संकल्प किया है, अगर स्त्री के साथ निभ गई तो अपना फरज़ पूरा कर जाऊंगा । आज कल क्या हो रहा है । ये दाज दान के झगड़े ही अशांति और घबराहट का मुख्य कारण हैं । मैं ने अपनी लड़कियों की शादी की । मैं ने किसी को दाज दान का संकल्प करके नहीं दिया, दाज दान का मैं ने संकल्प तो एक ओर रहा, लड़की का संकल्प भी नहीं कराया । मेरे जिम्मे चूंकि जगत कल्याण की ड्यूटी थी, इसलिए जो बात मेरी समझ में आई है ये आप लोगों को कहता रहता हूं ।

सब को राधास्वामी ।

हजूर परमदयाल जी महाराज
के प्रवचन
शिव देव राव शिशु शिक्षा केन्द्र
के उद्घाटन के समय
मानवता मंदिर,
होशियारपुर।

दिनांक 4-11-79

दोस्तो, बुज़रगो, माताओ, बहनो, राधा स्वामी

ये जो कुछ मैं ने किया है दाता दयाल ने एक शब्द में मुझे लिखा है :-

खेल खिलाऊं सुगम सुहेला, सुरत शब्द मत गाऊं
काल जाल से तू अब बांचे, विधि विचित्र बतलाऊं
नर शरीर सुर दुर्लभ पाया, सत् संगत में आया
तेरा काम बना है पूरा, सोच समझ तज माया

यह जो कुछ मैं कर रहा हूं ये माया है मगर मैं इस के बन्धन मैं नहीं हूं। शिशु स्कूल खोलने या प्रैस लगाने का कारण क्या है? दो साल हुए मैं अमरीका गया था, वहाँ एक डाक्टर रामदेव राव जी हैं। उसका बाप मेरा जानने वाला है। उसके लड़का नहीं था। दोनों पति पत्नी मेरे पास आए और कहने लगे कि हमारे लड़का नहीं है। मैं ने उनका दिल रखने के लिए और ढांढस देने के लिए उनको कहा, भाई, तेरा नाम राम देव राव है तुम्हारे लड़का हो जायेगा उसका नाम शिव देव राव रखना। वो मुझ पर विश्वास रखते थे, उनके लड़का हो गया। लड़के की फोटो स्कूल के अन्दर लगाई हुई है। उस ने साढे चुहत्तर हजार 74500/- रु० दान का हम को भेजा। सरकार के कानून के अनुसार इतना पैसा हम नहीं रख सकते हम को खर्च करना पड़ता है। मेरी समझ में कुछ नही आया, प्रैस लगा दी 31000 रु० उस पर खर्च आया, ये बिलडिंग बन गई नीचे की मंजिल बन गई, ऊपर की अभी छत पलस्तर बाकी है। सीमेंट नहीं मिलता, इस में मैं ने शिशु स्कूल खोल दिया। पढ़ाई की फीस मैं ने कोई नहीं रखी और बच्चों को वर्दी मुफ्त दी है। मैं ने पढ़ाई

की फीस क्यों नहीं रखी ? क्योंकि जिस आदमी ने दान दिया है या जो दान देता है अगर मैं ये ट्यूशन फीस रखता तो ये व्यापार स्तर पर आ जाता। इस लिए अगर कोई फल मिलता है दान का तो जिन्होंने दान दिया है उन को मिले, मेरे पर बोझ कोई नहीं।

मैं लड़के और भी लेना चाहता हूं। मगर जिस समय ऊपर की मंजिल बन जावेगी, आप हंसोगे ? मैं एक शर्त रखना चाहता हूं कि जो मां बाप बच्चे को लेकर आवें वह लिख कर दें कि अगर उन के तीन से अधिक बच्चे हैं तो वह और बच्चे को जन्म न देंगे। और अगर कम हैं, तो तीन से अधिक बच्चे पैदा न करेंगे। ये शर्त वह लिखकर देंगे तो हम उनके बच्चे को दाखिल कर लेंगे। मुझे मालूम नहीं मेरा यह ख्याल ग़लत है या सही है। मगर इस समय जितनी तकलीफ़ और मुसीबत हम लोगों को हो रही है यह अधिक आबादी के कारण है। जो ये शर्त लिख कर देगा मैं उस पर विश्वास कर लूंगा। मैं फकीर हूं, सच्चा आदमी हूं, मेरे साथ जो इस मामले में धोखा करेगा, प्रकृति उस को अवश्य सजा देगी। मैं ने ये

सारा काम किया मगर मेरा इस से कोई ज़ाती सम्बन्ध नहीं है। हस्पताल है। साठ हज़ार रु० की प्रति वर्ष दवाईयें आती हैं और बढ़िया से बढ़िया दवाईयें आती हैं। प्रकाशन है, मानव मन्दिर की 3800 कापियां बाहर जाती हैं और प्रति पुस्तक ८० या १०० पृष्ट से कम नहीं होती। वह भी मुफ्त जाती है क्योंकि यह संस्था दान पर चलती है। अपने मित्र रिटायर्ड मेजर जनरल जय सिंह जी को तकलीफ दी, मुझे खुशी है कि ये इस का फीता काट कर उद्घाटन कर दें, बच्चों को स्कूल के अन्दर बैठा दें।

दो अध्यापकाएं रखी गई है। इन को मेरी यह ताकीद है कि किसी बच्चे को थप्पड़ नहीं मारना। अगर बहुत ही जरूरी हो तो पीठ ज़रा थपथपादें। प्रार्थना जो प्रतिदिन यहां गाई जावेगी, आप देखेंगे इस में किसी मज़हब, पंथ, सम्प्रदाय का सम्बन्ध नहीं है। बल्कि एक मालिक का गुण गान है। जो सबका है।

खेल था खिल गया मालिक आप संभाल करेगा।

मानवता का गाना या प्रार्थना

हम सब बालक, प्यारे मालिक तेरी महिमा गायेंगे,
भले स्याने सुगुरे बनकर, मानवता अपनायेंगे।

मानवता है शान बडाई, सारी मानव जाती की,
काम करेंगे अच्छे जग में, देश का मान बढ़ायेंगे।

मात पिता की सेवा करके, भाई बहन से प्यार,
प्रेम का जीवन काटेंगे और घर को स्वर्ग बनायेंगे।

मानवता ही धर्म है सच्चा, मानवता ही पंथ,
इसी राह पर चलकर हम भी, मानवता फैलायेंगे।

मानवता की शिक्षा क्या है, मानवता का ज्ञान,
मानवता के ज्ञान को पाकर, मानव पदवी पायेंगे।

यह शिक्षा इस युग की शिक्षा, दी है संत फकीर,
इस शिक्षा को पाकर मालिक, हम तेरे बन जायेंगे।

सब को राधास्वामी।

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

आज श्री सच्चिदानंद जी जोगा मसाहिब जिला ग़ाजी पुर (यू.पी.) वालों का बनारस में स्वर्गवास हो गया इन के रिश्तेदार लिखते हैं कि आप दया करके उन की आत्मा को शांति दें। अब मैं अपनी आत्मा से प्रश्न करता हूं और इन मौजूदा महात्माओं से भी सवाल करता हूं कि क्या आप लोग या कोई और महात्मा किसी के मरने के पशचात अपनी आर्शीवाद से शांति या मुक्ति दिला सकता है। मैं ये प्रश्न इस लिए करता हूं कि मैं नहीं कर सकता। मेरे विचार में यह केवल मनुष्य का अपना ही भाव और विश्वास हैं। जिस प्रकार हिन्दुओं में क्रिया-कर्म, चोबरक और बारखी करते हैं। सच्चाई क्या है ? ऐ मज़हबी व पंथक दुनियाँ वालो, मेरी समझ में तो यह आया है कि जैसा ख्याल वैसा हाल

इस लिए चार दिन की जीवन यात्रा के लिए मैं ऐसे गुरुपने से बाज़ आया जिस में झूठ और पाखन्ड हो। जैसा ख्याल मरने वाले का होता है। उसके अनुसार उसका जन्म, मरन या मुक्ति मिलती है। सच्चिदानन्द के बारे में मालूम हुआ है कि उन्होंने गुरु की फोटो मरते समय अपने सामने रखी और राधास्वामी कहते हुए चले गये। में अपनी आत्मा से पूछता हूं क्या तुझ को पता है ? नहीं। यही प्रश्न मैं दूसरों गुरुओं से कहता हूं जो दुनियां को सत् लोक ले जाने के और मुक्ति दिलाने के ठेकेदार हैं, क्या आप को अपने किसी चेले के मरने की खबर होती है ? ये आप जानें और आपका काम जाने। मुझे नहीं होती। लोग कहते हैं, कि मेरा रूप गया, कोई कहता है पालकी, हवाई जहाज़, घोड़ा ले कर आया आदि-२। मैं ने यह काम क्यों किया ? मानवता मन्दिर क्यों बनाया ? केवल इसी लिए कि इस समय जो मज़हबी व पन्थक दुनियां में परदा रख कर हम गरीब, भोले अज्ञानी जीवों को लूटा जा रहा है, ये लूटे न जावें। कई भाईयों के बारे में जो कुछ होने वाला होता है स्वभाविक मेरे मुँह से निकल जाता है। यह ठीक होता है। मगर इस का

अर्थ यह नहीं है कि मैं करता हूं। क्योंकि मेरे अन्दर और बाहर में सचाई है इस लिए जो होने वाला होता है मेरे मुँह से निकल जाता है। अगर मेरे या अन्य महात्माओं के कहने से या आर्शीवाद से सचमुच कोई आदमी मुक्त हो जाता है तो मेरा क्या जाता है मैं हज़ार बार कहता हूं कि सच्चिदानन्द कि आत्मा को शांति मिले।

पत्र नं० २

प्यारे भाई, राधास्वामी !

पत्र मिला। अपनी आत्मा से पूंछता हूं कि क्या तू किसी को अत्म अवस्था दे सकता है। नहीं और हां,

बिन भागां कुछ न पावे

हां अध्यात्मिक अवस्था को हासिल करने का तरीका बता सकता हूं। वह यह है। (१) सदैव यह विचार (ख्याल) रखो कि हम मुसाफिर हैं। (२) हमारा असल घर रोशनी (light) है। और शब्द (sound) है। मगर वहां तक पहूंचने के लिए जो मन की इच्छाएं हैं वह रुकावट डालती हैं। जिस से मन उधर खिचता नहीं। इसलिए एक इष्ट बनाओ, जिस

जगह तुम्हारा विश्वास बैठता है उस रूप को मानव रूप मत समझो बलकि प्रकाश और शब्द का रूप समझो। घण्टा आधा घण्टा प्रातः आधा घण्टा सांय सुमिरन से जिस नाम से तुम्हारी प्रीत है। मैं राधास्वामी नाम को समझता हूं। मेरे गुरू ने यही बताया) उस नाम से मन को इकट्ठा किया करो और रूप का ध्यान बनाया करो। जहां तुम्हारा ध्यान बना, रूप प्रगट हुआ। फिर मुझे लिखो या मिलो। इस थोड़े से अभ्यास के पशचात् फिर तुम को मेरी संगत की आवश्यकता पड़ेगी।

—फकीर

देश के विजई

लेखक : श्री कुबेर नाथ श्रीवास्तव
एडवोकेट

१. हमारी अभिलाषा इस सँसार में तुमको विजई वनाकर विजई पुरुष के रूप में देखकर प्रसन्नताा प्राप्त करने की है। प्रतिवन्ध यह है कि तुम इस के अधिकारी हो। अगर तुम अधिकारी नहीं हो तो तुमको इसका अधिकारी बनाने की चेष्टा है।

२. उपजाऊ भूमि में किसान हर्षपूर्वक वहुमूल्य बीज वोता है और मनमानी बीज काटता है। ऊसर भूमि को भी तोड़ता फोड़ता और खाद देकर उपजाऊ बनाने का प्रयास करता रहता है। समय आने पर ऊसर भूमि भी उपजाऊ बन जाती है। किसान को इसमें अधिक परिश्रम करनी पड़ती है और किसान को ऊसर भूमि की देख रेख उपजाऊ भूमि से अधिक करनी पड़ती हैं। उपजाऊ भूमि की फसल काटकर

किसान को अवश्य प्रसन्नता होती है। परन्तु ऊसर भूमि को उपजाऊ बनाकर उसकी फसल काटने से अधिक प्रसन्नता प्राप्त होती है।

३. विजई पुरुष से हमारा अभिप्राय किसी वस्तु पर अधिकार प्राप्त करके उसको सुडौल व सुन्दर बनाकर उससे स्वयं लाभ उठाकर प्रसन्न होना तथा दुसरे को लाभ पहुंचाकर प्रसन्न करना है। जो विजई का लक्ष्ण है।

४. जैसे ऊसर भूमि में उपज की शक्ति दबी रहती है। और अवसर पाकर उभर आती है। वैसे ही तुम्हारे पास ही अन्दर विजय की शक्ति दवी पड़ी है। उस शक्ति का उभार कर दो और तुम विजय प्राप्त करने के अधिकारी हो जाओगे। गंगा नदी का जल हिमाचल पहाड़ की छाती फाड़कर हरद्वार में जैसे गंगा का रूप धारण करके भारत को हरा भरा बना देता है वैसे ही तुम देश पर विजय प्राप्त करके देश को हरा भरा बना दो। देश तुम्हारे पक्ष का गुणगान गाया करेगा।

५. विजय दो प्रकार का है पहला विजय

व्यवहारिक दूसरा पारमार्थिक एक किसी के देह पर विजय प्राप्त करना दूसरा किसी के मन पर विजय प्राप्त करना तथा एक बहिर्मुखी विजय दूसरा अन्तर मुखी विजय है अगर तुमने इन में से किसी एक पर विजय प्राप्त कर ली तो दूसरे पर विजय प्राप्त करने के अधिकारी बन जाओगे। दाता दयाल के नज़म का एक मिसरा :—

दस्त गीरे दो जहां का, दो जहाँ का है वह पीर।

इसमें दो जहां से अभिप्रात दीन व दुनियां से है।

६. धनवान पुरुष महल में, प्रतिष्ठित कुल में जन्म लेता है उसका पालन पोषण लाड प्यार से होता है। वह बिजली के प्रकाश में मखमल के गद्दे पर सोता है। महल के चारों तरफ संतरी पहरा देते रहते हैं पक्की सड़क पर मोटर कार में चलता है। कहने को तो वह सबके साथ मित्रता का व्यवहार करता है और सबको विश्वास पात्र प्रगट करता है। परन्तु उसके अन्तर की दशा इसके प्रतिकुल होती है, वह न किसी को अपना मित्र समझता है और न किसी पर विश्वास करता है। वह पुरुषार्थहीन उत्साह हीन और भयभीत होता है इस दोष को

छिपाने के हेतु वह मान बड़ाई तथा बाहरी आडम्बर के फेर में पड़ा रहता है। वह विजय प्राप्त करने का अधिकारी नहीं हो सकता। यद्यपि वह धनी होता है, मगर वह धन के अधीन रहता है धन उसके अधीन नहीं रहता इस दृष्टि से वह निर्धन है।

७. विजई पुरुष बहुधा निर्धन कुल में जन्म लेता है, जिसकी जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति कठिनता से होती है। यह दशा जाने या अनजाने तप का रूप धारण कर लेती है। वह एकान्त निर्भय निर्वैर, और साहसी होते हैं उसका जीवन संकट भय होता है, राह में पग पग पर कांटे चुभने का भय रहता है। परन्तु उस पर मालिक की दया रहती है। जो उसकी रक्षा करती रहती है।

८. हमारे बिजई राजवंश के भी होते हैं। मगर बिजय प्राप्त करने हेतु उनको भी उसी रास्ते से गुजरना पड़ता है जिस रास्ते से साधारण वंश के विजयी गुजरते हैं। किसी कार्य में विजय प्राप्त करने के हेतु तप करना आवश्यक है। तुम जानते हो कि तप किसको कहते हैं? चित्त की वृति को एकाग्र करके उसको इच्छित कार्य की सफलता की ओर

सम्पूर्ण शक्ति से लगा देना । इसके हेतु तुमको एकान्त वास करना और एकाग्र चित होना पड़ेगा । अपने वस्त्र शरीर व मन का पवित्र रखना होगा । शारीरिक व मानसिक ब्रह्मचर्य का पालन करना होगा । शारीरिक ब्रह्मचर्य को तुम जानते ही हो, मानसिक ब्रह्मचर्य किसी से द्वेष, इर्ष्या, मत्सर व घृणा का न करना है । काम क्रोध मद लोभ मोह व अहँकार का परित्याग करना होगा, परित्याग से हमारा अभिप्राय इनको अपने वश में करना है और उनके वश में नहीं आना है । तप करते समय भी अवधि में कम बोलो कम खाओ कम सोओ अपने लक्ष को किसी पर प्रगट मत करो । कोई जानने न पावे कि तुम तप कर रहे हो । इससे तुम्हारी इच्छा शक्ति और शक्तिशाली हो जायेगी और इच्छित वस्तु को बाध कर तुम्हारी ओर खिच लायेगी । तप की महिमा तुलसी दास ने निम्नलिखित चौपाई में बताई है :—

तप बल रचई प्रपंच विधाता, तपबल विष्णु सकल जग माता
तप बल सभू करही सहारा, तप बल शेष धरे महि भारा ।
तप अधार सब सृष्टी भवानी, कर ही जाई तप असीष जानी

जिन विजयीयों का वर्णन मैं कर रहा हूं उनका

जीवन चरित्र विस्तार पूर्वक पढ़े। राजवंश के व्यवहारिक विजई निम्नांकित है।

पार्वती ने हिमाचल के घर जब जन्म लिया तो नारद मुनी को हिमाचल ने पार्वती का हाथ दिखलाया नारद मुनी ने पार्वती का हाथ देखा तो पहली रेखा देख कर कहा कि हिमाचल तुम्हारी लड़की बड़ी भाग्यशाली है यह तमाम गुणों की खान है। जब दूसरी रेखा देखा तो यह पहली रेखा की प्रतिकूल थी उससे प्रतीत होता था कि पार्वती का वर निष्काम, भभूत रमाये हुए, नग्नधिङग, जटा रखे और मृगछाला लपेटे हुए होगा नारद प्रति कूल रेखाओं को देखकर सोच में पड़ गये। सोचने लगे कि या तो मेरी विद्या गलत है या रेखा गलत है इसके निर्णय के हेतु अन्तर मे चले गये तो अनुभव हुआ कि न तो हमारी विद्या गलत है और न रेखा गलत है। रेखा में जो अवगुण है वह सब शिव जी में गुण में परिवर्तित हो जाते हैं और उनकी वजाय कुरूप बनाने के सुन्दर व शोभाय मान बना देते हैं। पार्वती का विवाह शिव जी से होगा। मगर इसके वास्ते पार्वती तप करना होगा पार्वती

सुकुमार है क्या वह तप कर सकती है अकाशवाणी हुई कि अगर पार्वती का विवाह शिव जी से होना सम्भव है तो पार्वती का तप करना भी सम्भव है, मुस्कराते हुए नारद ने आंख खोली और कहा कि रेखा जो अवगुण है वह सब शिव जी मे गुण में परिवर्तण हो जाते हैं पार्वती का विवाह शिव जी से होगा, इसके हेतु उसको तप करना होगा। पार्वती ने तप किया और उनका विवाह शिव जी से हो गया।

विश्वामित्र आत्म दर्शी थे वह दशरथ के हितैषी व शुभचिन्तक थे उनको अनुभव था कि राम का विवाह सीता से होगा मगर कैसे होगा ? सीता के विवाह में शिव के धनुष को तोड़ना होगा, उसको तोड़ने के हेतु बिना तप किये हुए शक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। इसको अपने हृदय में गुप्त रक्खा राजा दशरथ के यहां आये और राजा दशरथ को उल्टा सीधा समझाया कि राक्षस हमारे यज्ञ को विध्वंस कर देते हैं उसकी रखवाली के वास्ते राम को हमारे साथ बन में भेज दो दशरथ को यह सुनकर दुःख हुआ मगर वह ऋषि की बात को टाल नहीं सकते

थे। उन्होंने राम को विश्वामित्र के साथ बन में आकर सामने ऋषि की आज्ञा के अनुसार उनके यज्ञ की रखवाली के लिये जो उनका तप सीता के विवाह हेतु था। सीता के स्वयंवर के आधितक उनका तप पूरा हो गया और उन्होंने धनुष को तोड़ने की शक्ति प्राप्त कर ली। सीता के स्वयंबर में रावण जैसे बड़े योद्धा आये थे उनके सामने राम की कोई गणना नहीं थी मगर वह शिव के धनुष को तोड़ने की शक्ति तपोबल द्वारा प्राप्त करने से रहित थे इस कारण शिव के धनुष को तोड़ना तो दूर की बात थी वह उसको टस्स से मस्स नहीं कर सके। और राम ने उसको सहज ही में तोड़ दिया जिसको देख कर सब लोग दंग रह गये और सीता का विवाह राम के साथ हो गया।

रावण अपने समय का सबसे शक्तिशाली राजा था उसको इस बात का घमंड हो गया वह ऋषि मुनियों पर अत्याचार करने लगा। उससे छुटकारा पाने के लिए ऋषियों ने उसके पराजय की सोची परन्तु कोई मनुष्य ऐसा दिखाई नहीं पड़ा जो उस पर विजय प्राप्त कर सके। रावण पर विजय प्राप्त

करने के हेतु तपोवल का होना आवश्यक है उनकी दृष्टि राम की ओर गयी जिन्होंने तप करके शिव का धनुष तोड़ा था उन लोगों को यह अनुभव हुआ कि राम में इतनी योग्यता है कि अगर वह तप करे तो इतनी शक्ति प्राप्त कर सकते हैं जिससे रावण पर विजयी हो सकते हैं फिर क्या था हिकमत अमली से उन्होंने राम को बनवास चौदह वर्ष के लिए करा दिया राम पहले तप कर चुके थे उनको अनुभव हो चुका था कि तप किस प्रकार किया जाता है वह लाख चाहते रह गये कि सीता उनके साथ वन न जाये मगर मिया हठ के सामने उनका कोई वश न चला सीता को अपने साथ में ले जाना पड़ा जो इनकी इच्छा के प्रतिकुल था वह बराबर राम को छेड़ती रही और उनके तप में बाधा हो गयी। जब तक वह राम के साथ रही राम कोई तप नहीं कर सके सीता से राम को छुटकारा जरूरी था वह अपने हथियार से आप मारी गयी। उसने राम को हिरण मारने का आदेश दिया रावण उसको हर ले गया राम को सीता से छुटकारा मिल गया। सीता के चले जाने से राम का तपोवल बढ़ने लगा क्योंकि उनकी वृति एकाग्र होने लगी सीता को ले जाने से

रावण में दुचिताई आ गई और इच्छा शक्ति निर्वल होने लगी एकाग्रता राम की इच्छा शक्ति इतनी प्रवल हो गई कि वह रावण पर विजयी हो सके तथा राबण की इच्छा शक्ति इतनी छिन्न भिन्न हो गई कि राम उसको पराजित करने में कुशल हो गये। राम और रावण में युद्ध हुई राम जीत गये रावण हार गया इसको सब लोग जानते हैं।

शिव जी की भी पार्वती के उनके साथ में रहने में तप की यही दशा थी जो सीता के राम के साथ रहने से हुई उनके तप में बाधा होती थी पार्वती भी शिव जी को छेड़ा करती थी जिससे उनके तप की एकाग्रता भंग हो जाती थी प्रकृति ने इसका प्रबन्ध करा दिया वह अपने पिता के यज्ञ में जलकर मर गयी और शिव जी को तप करने तथा ऋषि मुनियों को उपदेश देने का अवसर हाथ आ गया।

कृष्ण को कंस के वध करने के हेतु ग्वाल वाल के रूप में वृन्दावन में गाय चराकर तप करना पड़ा। जब उनको तप करने में शक्ति प्राप्त हुई तब गाय चराना छोड़ दिया और कंस का वध किया।

पान्डवों की कोई गिनती कौरवों के सामने नहीं

उसकी सारी हिन्दु प्रजा इस्लाम धर्म की अनुयायी हो जाये। शिवा जी को यह बात खली और वह उसको सहन न कर सका। उसके पास धन तथा सेना नहीं थी बड़ी सोच विचार के बाद देश के हित के लिए और औरंगजेब के इस कार्य को रोकने के हेतु लुट मार को उसने अपना अस्म औरंगजेब की रसद जहां कही जाती थी उस पर छापा मारकर लुट लेना सेना के हथियार तथा वारूद इत्यादि को नष्ट कर देना सेना के जलाशय में विष धोख उसका आदर्श हो गया महाराष्ट्र देश के सब लोगों की सहानुभूति उसके साथ हो गई औरंगजेब की फौज तंग आकर विवश हो गई और शिवा जी ने बीजापुर पर अपना अधिकार प्राप्त कर लिया। औरंगजेब को हिन्दुओं को मुस्लमान बनाने की चेष्टा भूल गयी और उसकी सारी आयु शिवा जी को परास्त करने में व्यतीत हो गयी परन्तु वह सफल न हो सका। और अपनी अभिलाषा को अपनी मृत्यु के साथ ले गया।

यही दशा राजा रणजीत सिंह की थी। वह एक किसान का लड़का था चेचक के कारण उसकी एक आंख जाती रही वह पढ़ा लिखा नहीं था परन्तु वह

इतना शूरवीर बुद्धिमान व पराक्रमी था कि सारे पंजाब व काश्मीर का राजा बन बैठा उसके बाद कावुल पर विजय प्राप्त कर लिया कावुल पर विजय प्राप्त करने के बाद उसने वहाँ का गर्वनर अपने एक सरदार को बनाकर अपनी राजधानी लोटे जब तक वर्षा ऋतु आरम्भ हो गयी नदियों में वाढ़ आ गई और कावुल जाने का रास्ता बन्द हो गया यह देखकर कावुल के मुस्लमानों ने विद्रोह कर दिया गर्वनर सरदार ने इसकी सूचना रणजीत सिंह को दी। रणजीत सिंह ने अपनी फौज को सतलुज नदी पार करने का आदेश दिया। बाढ़ के कारण फौज नदी पार न कर सकी, परन्तु रणजीत सिंह ने अपना घोड़ा नदी में डाल दिया और कुशलता पूर्वक कावुल पहुंच गया और सरदार के सहयोग से वगावत को दबा दिया। जिस स्थान पर रणजीत सिंह अपना घोड़ा नदी में छोड़ा था तब से उस स्थान का नाम "अटोक" पड़ गया और यह कहावत प्रसिद्ध हो गयी कि "जाके मन में अटक है सोई हुआ अटोक"।

उसके अनुभव का यह हाल था कि भारत का मानचित्र उसका सरदार एक दिन उसको दिखा

रहा [illegible] । "इस लाल देश का मालिक कौन है सरदार ने कहा अंग्रेज़, रणजीत सिंह ने कहा कुछ दिन में सब भारत लाल हो जायेगा। उसके तेज़ का यह हाल था एक अंग्रेज अफसर ने उसके सरदार से पूछा कि तुम्हारे राजा कि कौन सी आख चेचक में जाती रही सरदार ने उत्तर दिया कि हमारे राजा का चेहरा इतना तेजवान है कि मैं आज तक उसको देखने का साहस न कर सका। इसको सुनकर अंग्रेज दंग रह गया। रणजीत सिंह की सेना इतनी शक्ति-शाली व सुसज्जीत थी कि उसके भय से अंग्रेजों को पंजाब पर अधिकार पाने की लालसा उसके जीवन काल में पूरी न हो सकी। वह तभी पूरी हुई जब वह मर गया और उसकी सेना बिखर गयी तथा उसके सिपाहियों को अंग्रेजों ने अपनी सेना में भर्ती कर लिया। बाहर मुखी पुरुष जिन्हों ने स्थूल वस्तू पर बिजय प्राप्त की है उन का वर्णन हम ने विस्तार पूर्वक कर दिया है अन्तर मुखी पुरुष जिन्होंने सुक्ष्म वस्तू यानी मन पर विजय प्राप्त की है वह इतने प्रसिद्ध है कि उन से सब लोग भली भांति परिचीत है इस लिए उन का वर्णन संछेप ही में करना उचित समझता हूं।

महावीर स्वामी आप दक्षीन देश के एक प्रार्च न राजा के लड़के थे जो जैन मत के वानी हुए है यह भारत का सबसे प्राचीन धर्म है ।

गौतम बुद्ध, आप उत्तर प्रदेश के एक राजा के लड़के थे जैन धर्म के बाद आप ने बौद्ध धर्म को प्रचलित किया जो कि चीन, जापान, कोरिया, श्याम लंका; तिब्बत ब्रह्मा आदि देशों भली भांति प्रचलित है । भारत में इसके अनुवाई अशोक जैसे सम्राट थे ।

संत तुलसी दास हाथरस वाले, आप गुजरात देश के एक राजा के लड़के थे । बैराग वस घर छोड़ दिया, हाथरस में आकर संत मत का प्रचार जीवन काल तक करते रहे ।

परम संत कबीर साहेब, नानक साहेब, पलटू, साहेब, जग जीवन साहेब व रविदास साहेब इत्यादि निर्धन वंस के जिन्हों सदगती व निर्वारय अवस्था प्राप्त की है और सारे देश में संतमत को प्रचलित किया है जिससे देश हरा भरा है

आग लगी अ्रसमान में, झरी झरी पड़े अंगार
जो नहीं होते संत जन, जरी मरता संसार

उपरोक्त स्थूल वो सूक्ष्म विजई पुरुषों के जीवन चरित्र पर ध्यान न देने से स्पष्ट होता है कि इन के विजय का आधार इन की निर्भयता, सच्ची लगन, सहनशीलता, दूरदर्शता व इच्छा शक्ति की प्रबलता थी अगर तुम अपने अन्तर में सच्च हो तो उपरोक्त सब गुण तुम में आजावेंगे।

मगर जैसे कोई भूमि कितनी हो उपजाऊ हो जब तक उसमें वीज न वोया जावे, सिचाई वो निराई न की जावे कोई फसल उसमें पैदा नहीं हो सकती वैसे ही जब तक तुम किसी विजई पुरुष के के सम्पर्क में नहीं आवोगे और उसकी सहानभुती के अधिकारी नहीं बनोगे तुम्हारे उपरोक्त सब गुणों के होते हुए भी तुम को कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। इस लिए यह आवश्यक है कि किसी विजई पुरुष से नाता जोड़ो उस से प्रेम करो उसकी आज्ञा का पालन हितचीत से करो ता कि उसका संस्कार तुम ग्रहण कर सका इन सब बातों के होते हुए भी मालिक के दया का होना अनिवार्य है :

कुछ करनी, कुछ कर्म गती, कछूक पूर्वला लेख
देखो भाग कवीर का लख से भया आलेख।

बादल का काम पानी बरसाना है खेत में बीज बोना उनकी देख भाल कर के फसल काटना और अपना पेट भरना किसान का काम है। हम अपना काम करते हैं तुम अपना काम करो। विजई बन कर सुखी रहो। दूसरों को सुख पहुंचाओ यही तुम्हारा लक्ष है। गुरु देव तुम्हारा कल्याण करे।

—राधास्वामी

निवेदन

१. फकीर लायब्रेरी चैरीटेब्ल ट्रस्ट गत कई वर्षों से अन्धों, बीमारों और असहाय भाईयों की सहायता करता चला आ रहा है। अब क्योंकि मन्दिर में प्रैस और शिशु शिक्षा केन्द्र खुल गया है, खर्च बढ़ गया है। यदि किसी भाई को यह सहायता बन्द करना पड़ी तो क्षमा चाहते हैं।

२. पत्र व्यवहार करते समय अपना पूरा साफ पता और मानव मन्दिर का नम्बर लिखा करें।

सेक्रेट्री
मानवता मन्दिर

अपना कर्मभोग अथवा मौजमालिक

अब में 94 साल का होने वाला हूं पिछला सारा जीवन मेरे सामने आता है। राम को मिलने के लिए चला था। राम का पता लगा अपने घर का भी अनुभव हुआ। प्रारब्धकर्म या मौज आधीन मज़बूरन घसीटा जा रहा हूं।

जिन्दगी के अमली पहलू के तजर्बे के बाद ख्याल आया कि जब तक इन्सान का इखलाक व नीयत साफ़ नहीं वो किसी सूरत में रूहानियत अथवा अनुभव या सारभेद या शांति कहलो प्राप्त नहीं कर सकता। इस शिक्षा के लिए मानव मन्दिर की बुनियाद रखी थी कि सेंटर के बगैर गुज़ारा न था। ट्रस्ट के कानून के अनुसार जो दान यहां आता है वह उसी वर्ष में कुछ प्रतिशत रखकर सारा खर्च करना आवश्यक है। मौज या बदकिस्मति कहलो मेरी कि अमेरिका से रामदेव राव ने चोहत्तर हजार पांच सौ

रुपया दान में भेजा। उसे खर्च करने के लिए इस वर्ष शिशु शिक्षा केन्द्र और छापा खाना खोले गये हैं शिशु शिक्षा केन्द्र में निर्धन बच्चे लिए जाते हैं और उनसे कोई फीस नहीं ली जाती है। उनको वरदी भी दी जाती है। उनके माता पिता को लिखकर देना होता है कि वे तीन बच्चों से अधिक पैदा न करेंगे। लोगों ने ऐसा लिख दिया है। वे अपने वचन का पालन करेंगे या नहीं। इस विषय में कुछ कह नहीं सकता। जो मासिक पत्र व पुस्तकें ट्रस्ट छापता है उनका कोई मूल्य नहीं लिया जाता है। हमारी पुस्तकों का प्रकाशन पंजाबी, हिन्दी तथा अंग्रेजी तीन भाषाओं में होता है। इस समय अंग्रेजी की निम्नलिखित किताबें हैं।

अंग्रेज़ी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans.
2. A Word to Canadians.
3. Manvata the true religion.
4. Religious Research. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth
8. Science of God Realization.
9. True Sanatan Dharma or True Religion of Humanity.
10. Jeewan Mukti. 11. Art of happy livinig.
12. Key to Freedom. 13. Broadcast of Reality in America.

और यह किताबें पंजाबी भाषा में :—

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ।

ट्रस्ट ऐलोपैथिक और होम्योपैथिक अस्पताल भी चल रहा है। इन सब कामों में बड़ा पैसा खर्च होता है। आमदनी को देखते हुये आगे ट्रस्ट को पता नहीं कि यह सभी सेवायें चला सके। ऐलोपैथिक दवाखाने की सहायता के लिए सरकार से सहायता चाही है पता नहीं क्या सरकार निर्णय करे। हो सकता है ऐलोपैथिक हस्पताल बंद करना पड़े किन्तु शिशु शिक्षा केन्द्र तथा प्रकाशन चलता रहेगा। यथार्थ ज्ञान और साफ बयानी के कारण इतना धन नहीं आता। मानव मन्दिर 3800 कापियां प्रतिमास जाती हैं किन्तु थोड़े लोगों ने ही उसके प्रकाशन में सहायता को है। बाकी मुफ्त का माल समझकर मंगाते जिन लोगों की इच्छा साहित्य पढ़ने की है वे मंगवा सकते हैं। मेरी वर्णन शैली में रोचक

तथा भयानक बातें नहीं हैं। इसी कारण धन का अभाव है। मैं नहीं कहता कि आप लोग अवश्य ही मन्दिर की सहायता करें मगर जो यह समझते हों कि मैं अच्छा काम कर रहा हूं सहायता करें।

जो देता है उसको मिलता है। मानव मन्दिर भेजने में मेरा कोई एहसान नहीं। जो मुफ्त का माल समझ कर मंगवाते हैं उनसे प्रार्थना है कि वे मंगवाना बंद कर दें ताकि हमारे खर्चे में कमी आवे। ट्रस्ट से अब तक गरीबों दुःखियों व असमर्थ विद्यार्थियों को मासिक सहायता दी जा रही है लगता है वह भी बंद करनी पड़ेगी।

मैंने सोचा था कि अगर सत्य से जो मैंने समझा है, जिसकी पुष्टी कबीर साहब व स्वामी जी ने भ की है और जो इस सनातन धर्म की ऊंची शिक्षा के अनुसार भी ठीक है, समाज को इस शिक्षा से लाभ होगा, मगर मैं देखता हूं कि सच्चाई की लोगों को आवश्यकता नहीं। संसार को शांति व परमार्थ या यथार्थ ज्ञान नहीं चाहिए। मैं सोचता था इस सच्चाई से लोग अपना जीवन सफल बनाएंगे व शांत प्राप्त करेंगे। ऐसा नहीं हुआ।

ऐ मालिक ! तू है तेरी मौज है । मैं यह नहीं चाहता कि मेरी इच्छा पूर्ण हो। मौज की इच्छा पूर्ण हो। बुढ़ापा है, अब ज्यादा काम नहीं होता। बाहर दौरे पर जाने से जरूर कुछ पैसा मिल जाता है किन्तु अब ज्यादा दौरा भी नहीं होता। मौज मालिक ।

●

शोक समाचार

श्री बोग्रगू ओंकारम का शरीर घूट गया । यह मुझ से प्रेम करते थे व हनमकोंडा राधास्वामी सत्संग केन्द्र और मानव मन्दिर की सहायता किया करने थे । यह एक धर्मात्मा बड़े सात्विक विचार वाले तथा नेक सज्जन थे। दुनियां में जो आता है वह जाता ही है। मुझे हैरानी है कि पुराने साथी एक एक करके जा रहे हैं। मैं अभी बैठा हूं न जाने कब तक रहना है। मैं चाहता हूं उनकी आत्मा को शांति मिले। मैं कहता हूं कि शांति मिले किन्तु यथार्थ तो यह है कि सबको अपने कर्मों के अनुसार गति मिलती है। राधास्वामी दयाल ने भी कहा है कि कर्म जो जो करेगा तू भोगना पड़ेगा।

यहां पर हर प्रकार की

हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेज़ी तथा किताबों

की बढ़िया छपाई के लिए

• शिवदेव राव प्रैस •

मानवता मन्दिर, सुतैहरी रोड,

होशियारपुर में पधारें ।

फोन : 2022

मैनेजर

राज कुमार सूद